P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817

Remarking
Vol-II * Issue-VIII* January- 2016

अजन्ता की गुफाओं की चित्रकला–संरक्षण एवं पर्यटन विकास

उषा शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शा. हमीदिया, कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, भोपाल

सारांश

अजन्ता की गुफाओं की चित्रकला सम्पूर्ण विश्व में कला के उत्कृष्ट नमूने माने गए हैं। इनका भारत में कला के विकास पर गहरा प्रभाव है। अजन्ता की गुफाऐं विश्व धरोहर के रूप में संरक्षित हैं। यूनेस्को द्वारा 1983 से इन्हें विश्व स्थल घोषित किया गया है। इन कला मंदिरों के चित्र तकनीकी दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान रखते हैं। इन चित्रों के रंगो की चमक आज भी विद्वानों के आश्चर्य का विषय है। अजन्ता की चित्रकला में रेखाओं का बहुत महत्व है केवल रेखाओं द्वारा भाव प्रदर्शन इसकी विशेषता है। संसार के चित्रों में कही भी रेखाओं द्वारा इतना सुंदर भाव प्रदर्शन व गतिमयता नहीं है। आध्यात्मिकता एवं भौतिक जीवन का चित्रण अजन्ता की चित्रकारी में मिलता है। किन्तु भाव प्रवणता ही अजन्ता की चित्रकला की आत्मा है। भगवान बुद्ध की अहिंसा, करूणा मैत्री आदि भावों के साथ मानव की लज्जा, प्रेम, भय, शोक, उत्साह, क्रोध, घृणा चिन्ता त्याग आदि भाव बड़े सुंदर ढंग से प्रदर्शित किए गए हैं जिनकी संसार भर में प्रसिद्ध है अजन्ता के चित्रों मे नारी को बहुत ऊँचा दर्जा दिया गया है अधिकांशतया नारी को सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है परन्तु अजन्ता के चित्रकारों ने नारी को कला की अधिष्ठात्री देवी के रूप में माना है चित्रों में नारी भौतिक आकर्षण का केन्द्र न होकर आध्यात्मिकता, वात्सल्य, करूणा, प्रेरणा एवं शक्ति की परिचारिका है।

इन गुफाओं की चित्र कला का संरक्षण महत्वपूर्ण है। भारत में इनका संरक्षण देश की आजादी से पूर्व एवं स्वतंत्रता पश्चात् निरन्तर होता रहा है। भारत की सांस्कृतिक,आध्यात्मिक चिंतन धारा को समेटे हुए यह चित्र भारत में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में स्थान रखते हैं इनके संरक्षण के लिए भारत सरकार सतत् जागरूक है। पर्यटन विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से प्रयास होते रहे हैं। इस लेख में संरक्षण एवं पर्यटन विकास के लिए कुछ पक्षों पर विशेष रूप से चिन्तन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : चैत्य गुफाए, विहार, जातक कथाऐं, टेम्परा, फ्रस्को, हरसिंगार।

प्रस्तावना

महाराष्ट्र के ओरंगाबाद जिले में सेन्ट्रल रेलवे के जलगांव पुहुर और ओरंगाबाद स्टेशनों से फरदापुर नामक स्थान तक बस से जाना पड़ता है। बधोरा नामक एक नदी फरदापुर से चार मील की दूरी पर है। इसमें अनेक घुमाव हैं और जब तक अन्तिम घुमाव पार नहीं किया जाता। अजन्ता की गुफाओं का दर्शन नहीं होता। अन्तिम घुमाव पार करते ही सामने एक 300 फीट ऊँचा अर्धचन्द्राकार टीला दिखाई देता है जो कि गगनचुम्बी महल सा प्रतीत होता है। ये ही अजन्ता के कला मन्दिर हैं जिनमें प्रेम, धैर्य, उपासना, भक्ति सहानुभूति त्याग तथा शांति के अपूर्व उदाहरण चित्रकला, मूर्ति तथा वास्तुकला के रूप में विद्यमान हैं।

सैकड़ो वर्षों तक घने जंगलों में जानवरों, चमगादड़ों और पक्षियों का निवास स्थान बने रहने के बाद सन् 1819 ई. में इन कला मन्दिरों का दशन मद्रास सेना के अधिकारी जॉन स्मिथ और अधिकारियों को हुआ जो वहाँ शिकार की खोज में पहुँचे थे। "उसके तीन वर्ष बाद 1822 ई. में विलियम रस्किन ने बॉम्बे लिटररी सोसायटी के लिये एक लेख में अजन्ता में प्राप्त कला मन्दिरों का विस्तृत वर्णन पढ़ा। फिर 1824 ई. में जेम्स ई. एलेक्टजेंडर ने इन गुफाओं का दर्शन किया और उन्होंने इसमें सुरक्षित सुन्दर चित्रों की जानकारी 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी को दी।' 1843 ई. में भारतीय मूर्तिकला वास्तुकला के जिज्ञासु जेम्स फरग्यूसन ने चित्रित गुफाओं का विवरण लिखकर ईस्ट इंडिया कंपनी को दिया तथा इनकी सुरक्षा के लिये आग्रह किया। फलस्वरूप रोबर्ट गिल नामक एक महान चित्रकार 1844 ई. में भेजा गया जिसन यहाँ आकर अजन्ता के चित्रों की प्रतिलिपियाँ तैयार की जिनका कि इंग्लैण्ड में क्रिस्टल पैलेस में प्रदर्शन हुआ। परन्तु 1866 ई. में किसी कारण आग लग जाने से ये

प्रतिलिपियाँ सब जल गई। इसके बाद सन् 1870 से 1881 तक बम्बई आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल मिस्टर ग्रीफित्स ने अपने विद्यार्थियों की सहायता से फिर अजन्ता के चित्रों की प्रतिकृतियाँ तैयार कराई और इन्हें दो बड़ी जिल्दों में प्रकाशित किया। ये चित्र भी लंदन में किसो कारण आग लगने से भस्म हो गए। इनमें से कुछ बचे जो कि साउथ किसिंग्टन के अल्बर्ट म्यूजियम में सुरक्षित हैं, तदोपरान्त 1909–11 में लेडी हरिंघम भारत आयी और उन्होंने श्री नन्दलाल बोस तथा अन्य कई भारतीय चित्रकारों की सहायता से फिर अजन्ता के चित्रों की कुछ प्रतिकृतियाँ तैयार कराई। उन्होंने निजाम से भी सहायता मांगी जिसके फलस्वरूप सर सैयद अहमद खाँ वहाँ के अध्यक्ष नियुक्त हुए जिन्होंने फिर से इन चित्रों की नकल कराई। उसके कुछ समय बाद भारत सरकार ने चार जिल्दों में इन चित्रों को प्रकाशित किया और बाद में ललित कला एकेडेमी ने यहाँ के चित्रों की अनुकृतियाँ तथा छवि पहुँचाने का प्रयास किया। 1908 में अजन्ता की गुफाओं के लिये एक क्यूरेटर की नियक्ति हुई जिससे कि यहाँ की सुरक्षा का पूर्णरूपेण प्रबंध हो गया है।"[1]

इस प्रकार हम देखते है कि अजन्ता की गुफाओं की चित्रकला को अंग्रेजों ने समझा और उसकी सम्पूर्ण सुरक्षा का दायित्व समझ कर उसके संरक्षण का प्रबन्ध ही नहीं किया अपितु प्रतिकृतियाँ तैयार करवा कर उसे सम्पूर्ण विश्व की धरोहर के रूप में साउथ किसिग्टन के अल्बर्ट म्युजियम मे सुरक्षित करवाया।

अजंता के कला मंदिर चट्टानों के आग्नेय पत्थरों की परतों को खोखला करके बनाए गए हैं। लगभग तीस गुफाओं की खुदाई पहली शताब्दी ई.पू. और सातवीं शताब्दी के बीच दो रूपों में की गई थी चैत्य (मंदिर) और बिहार (मठ)। यद्यपि इन मंदिरों की मूर्तिकला अद्भुत है किन्तु गुफाओं का मुख्य आकर्षण भित्ति चित्रकारी है। इन चित्रों में बौद्ध धार्मिक आख्यानों और देवताओं का जितनी प्रचुरता और जीवंतता के साथ चित्रण किया गया है यह भारतीय कला के क्षेत्र में अद्वितीय है।

गुफाएँ बौद्ध धर्म द्वारा प्रेरित उनकी करूणामय भावनाओं से भरी हुई चित्रकला से ओतप्रोत हैं। ये गुफाएँ सजावटी रूप से तराशी गई हैं फिर भी इनमें एक शान्ति और अध्यात्म झलकता है ये दैवीय ऊर्जा से भरभूर हैं। इन गुफाओं का उपयोग बौद्ध भिक्षुओं द्वारा ध्यान लगाने और भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का अध्ययन करने के लिये किया जाता था। गुफाओं की दीवारों तथा छतों पर बनाई गई ये तस्वीरें भगवान बुद्ध के जीवन की विभिन्न घटनाओं और विभिन्न बौद्ध देवत्व की घटनाओं का चित्रण करती हैं। इसमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण चित्रों में जातक कथाएँ हैं, जो बोधिसत्व के रूप में बुद्ध के पिछले जन्म से संबंधित विविध कहानियों का चित्रण करते हैं, इसमें गौतम बुद्ध की छवियाँ शांत और पवित्रमुद्रा द्वारा जीवन को शांति के संदेश से भरती है।

अजंता की गुफाओं में बौद्ध दर्शन ही नहीं अपितु गॉव एकान्त जीवन्त, नगरों का विलासमय जीवन, भिखारी, मछुए युद्धरत सैनिक, शिकारी आदि सभी का चित्रण अजन्ता की विशेषता है। इन सभी आकृतियों के पार्श्व में जीवन का धार्मिक तथा दार्शनिक पहलु छिपा हुआ है।

वाचस्पति गैरोला के अनुसार विषय की दृष्टि से अजन्ता की चित्रावली को तीन प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है–

1. आलंकारिक, 2. रूप भैदिक, तथा 3. वर्णनात्मक ।

पहली श्रेणी में पशु, पक्षी, पुष्प बेलें, राक्षस, किन्नर, नाग, गरूड यक्ष गन्धर्व और अप्सरा आदि को रखा जा सकता है। दूसरी श्रेणी के चित्रों में बुद्ध, बोधिसत्व, राजा, रानी विभिन्न मुद्राओं में बुद्ध उनका जन्म, निर्वाण और जीवन की अलौकिक घटनाएँ प्रमुख हैं। तीसरी श्रेणी के चित्र जातक कथाओं पर आधारित हैं। अधिकांश चित्र इसी प्रकार के हैं।

अजन्ता की नवीं गुफा सर्वाधिक प्राचीन मानी जाती है। यह एक चैत्य गुफा है इसमें 21 अष्टकोणीय खम्बे हैं। यह गुफा 35 मीटर लम्बी 7 मोटर चौड़ी तथा 7.1 मीटर ऊँची है। एक ओर एक स्तूप बना है। यहाँ पर चित्रित एक चित्र जिसका विषय नागराजा सेवकों के साथ प्रमुख है। स्तूप पूजा के लिये जाता मानव समूह तथा भगवान बुद्ध के चित्र भी आकर्षक हैं। स्तूप पूजा के लिए जाते हुए मानव समूह में 16 आकृतियाँ हैं। सभी आकृतियों की भंगिमाएँ विभिन्न हैं। सभी आकृतियों की केश सज्जा अलग है, सिर पर बंधी पगड़ी या मण्डासे सभी में एक नवीनता है। प्रत्येक मुण्डासे का अलंकरण अलग हैं जो बहुत आकर्षक है। मोटे–मोटे आभूषणों से हाथ, गले तथा कानों को सजाया गया है। अलंकृत पटकों से आकृतियों का सौन्दर्यवर्धन हो गया है। इन चित्रों में काले, पीले फिरोजो तथा हरे रंग का प्रयोग हुआ है।

दसवीं गुफा में छदन्त तथा श्याम जातक कथाएँ चित्रित हैं। दरबारियों के साथ राजा स्तूप पूजा तथा खम्बों पर भगवान बुद्ध के चित्र अंकित है। एक चित्र में राजा अपनी दस रानियों के साथ बोधिवृक्ष की पूजा करने जाता हुआ बनाया गया है।

सभी रानियाँ अर्द्धनग्न बनी हैं तथा विभिन्न प्रकार के आभूषण पहने हुए हैं। जिनमें कर्ण कुण्डल माला, बाजुबंद तथा चूड़ियाँ है। बोधिवृक्ष के दूसरी ओर महिला नर्तकियों तथा वादकों का समूह है। जिनमें गति का आभास होता है। गेरू रामरज, हरा (ट्रेरावर्ट) काला तथा सफेद रंग का प्रयोग यहाँ हुआ। श्याम जातक का चित्र तथा हाथियों के साथ बुद्ध का चित्र बढ़ा सुन्दर है। खम्बों पर कहीं फूल तथा बेलों का अंकन है।

सोलहवीं गुफा में भगवान बद्ध के जीवन से संबंधित चित्र हैं। हस्तिजातक, महा उम्मग जातक, सुता सोमजातक, मरणा सन्न राजकुमारी, अप्सरायें, उपदेश देते हुए बुद्ध, हाथियों का जुलूस आदि यहाँ बहुत सुन्दर रूप से चित्रित है। इस गुफा का सबसे प्रसिद्ध एवं भावपूर्ण चित्र एक मरणासन्न राजकुमारी का है। फर्गुसन तथा ग्रिफित्स ने इस चित्र की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। इस गुफा में वह चार दृश्य भी चित्रित है जिन्हें देखकर बुद्ध को वैराग्य हुआ था। चित्र हैं 1. एक शवयात्रा। 2. वृद्ध पुरूष 3. रोगी 4. सन्यासी बुद्ध जन्म एवं शैशव अवस्था के चित्र भी यहाँ चित्रित है।

सत्रहवीं गुफा में 61 चित्र हैं। परन्तु अब अधिकतर खराब हो गए हैं। इस गुफा में वरांडा में भी अति सुन्दर चित्रकारी की गई है। दान देता हुआ राजा गन्धर्व व अप्सराएँ, बुद्ध की पूजा करते हुए चित्रित हैं। विभिन्न चोखटों में कली से फूल खिलने तक की

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817

अवस्थाओं में लताओं पत्तों तथा फूलों से नमूने बनाए गए हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सी जातक कथाएँ इस गुफा में चित्रित हैं। जिनमें की श्याम जातक बेसन्तरजातक, गजजातक, शिविजातक, महाहँस जातक महकपि जातक, मृगजातक आदि बहुत सुन्दर हैं। उन्नोसवीं गुफा में पत्थरों को काटकर अलंकत किया गया है इसमें छत के आलेखन तथा भगवान बुद्ध के चित्र हैं जो भग्नावस्था में हैं।

छठवीं व ग्यारहवीं गुफा में कुछ द्वारपाल तथा जातक की कथाएँ चित्रित हैं। ग्यारहवीं गुफा में तालाब का चित्र है जिसमे कुछ महिलाएँ तथा बच्चे स्नान कर रहे हैं।

पहली गुफा में मार विजय नामक विशाल चित्र है। जिसमें कामदव की सेना ने भगवान बुद्ध को घेर रखा है। जिसमें भद्दी से भद्दी आकृति के राक्षस तथा सुन्दरतम स्त्रियाँ है जो उनके तप को भंग करने का प्रयत्न कर रहीं है। परन्तु भगवान बुद्ध शान्त चित्त बैठे हैं। इसी गुफा की दीवार पर पद्म पाणि बोधिसत्व का एक विशाल चित्र अंकित है। हाथ में कमल लिए विश्व चिन्तन, त्याग वैराग्य आदि का भाव उनके चेहरे से परिलक्षित होता है। इसी प्रकार वज्रपाणि बोधिसत्व के चित्र में सहस्त्रों मोतियों से बना मुकुट अपने में अद्वितीय है। इस गुफा में ऐतिहासिक चित्र भी मिलता है जिसमें भारत के राजा पुलकेसिन द्वितीय को फारस के बादशाह खुसरो परवेज के राजदूत का स्वागत करते हुए दिखाया गया है। इसमें भारत और फारस के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का ज्ञान होता है। इस चित्र की प्रतिकृति राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में विद्यमान है। इसी गुफा में दो सांडों का युद्ध बड़ी ही सुन्दरता से चित्रित किया गया है।

दूसरी गुफा के चित्रों में माया का स्वप्न, महाहँसजातक तथा बुद्धजन्म के बहुत सुन्दर चित्र हैं।इस गुफा में एक वृद्ध साधु का प्रसिद्ध चित्र है। जिसमें यह एक हाथ में लाठी पकड़े है। झूलाझूलती राजकुमारी का चित्र स्तम्भ के सहारे खड़ी हुई एक स्त्री का बहुत सुन्दर चित्र इसी गुफा में है। तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ ने बौद्ध चित्रकला की तीन शैलियों का वर्णन किया है। यह शैली देव, नाग और यक्ष शैली के नाम से प्रचलित थीं। इसी प्रकार तीन ही केन्द्र थे। देव शैली मध्यदेशीय थी, नागशैली पूर्वी थी तथा यक्षशैली पश्चिमी थी। अजन्ता की चित्रकारी देवशैली पर आधारित मानी जाती है। भारतीय चित्रकला का उज्जवल इतिहास भित्ति चित्रों से ही प्रारंभ होता है। संसार में इनके समान चित्र कहीं नहीं बने ऐसा विद्वानों का मत है।

अजन्ता के चित्र तकनीकी दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान रखते हैं। अजन्ता में फ्रेस्को तथा टेम्पेरा दोनो ही विधियों से चित्र बनाए गये हैं। अजन्ता की गुफाओं के चित्रों की चमक हजार से अधिक वर्ष बीतने के बाद भी आधुनिक समय में विद्वानों के लिये आश्चर्य का विषय है। चावल के मांड, गोंद और अन्य कुछ पत्तियों तथा वस्तुओं का सम्मिश्रण कर अविष्कृत किए गए रंगों से ये चित्र बनाए गए हैं। आज तक इनका रंग खराब नहीं हुआ है। रंगों और रेखाओं की यह तकनीक आज भी गौरवशाली अतीत की याद दिलाती है।

ब्रिटिश संशोधक मि. ग्रिफित्स कहते हैं अजंता में जिन चितेरों ने चित्रकारी की है वे सृजन के शिखर पुरूष थे। अजंता में दीवारों पर जो लंबरूप (खड़ी) लाईनें कूची से सहज ही खींची गई हैं वे अचंमित करती हैं। वास्तव में यह आश्चर्यजनक कृतित्व है। परन्तु जब छत की सतह पर संवारी क्षितिज के समानान्तर लकीरें, उनमें संगत घुमाव मेहराव की शक्ल में एकरूपता के दर्शन होते हैं और इसके सृजन की हजारों जटिलताओं पर ध्यान जाता है तब वास्तव में यह लगता है कि यह विस्मयकारी आश्चर्य कोई चमत्कार है।

अजन्ता की चित्रकला में रेखाओं का बहुत महत्व है। केवल रेखाओं द्वारा भाव प्रदर्शन इसकी विशेषता है। संसार के चित्रों में कहीं भी रेखाओं द्वारा इतना सुन्दर भाव प्रदर्शन व गतिमयता नहीं है। ये रेखाएँ कहीं मोटी कहीं मध्यम कहीं महीन हैं परन्तु कलाकार ने जो भाव प्रकट करना चाहा है सफलता से प्रकट किया है। ये रेखाएँ लयात्मक हैं जिसके कारण चित्रों मे लावण्य उत्पन्न हो गया है। इन चित्रों में करूणा शान्ति उल्लास सौहार्द भक्ति विनय तथा विकलता की आदि भावनाओं का सुन्दर प्रदर्शन हुआ है। भाव प्रवणता ही अजन्ता की चित्रकला की आत्मा है। भगवान बुद्ध की अहिंसा करूणा मैत्री आदि भाव इन चित्रों में दृष्टिगोचर होते है। मानव की लज्जा, प्रेम, भय शोक, उत्साह, क्रोध, घृणा चिन्ता त्याग आदि भाव बड़े सुन्दर ढंग से प्रदर्शित किए गए हैं जिनकी संसार भर में प्रसिद्धि है।

आध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन का चित्रण अजन्ता की चित्रकारी में मिलता है। नगर, गांव, राजा से रंक तक समाज के सभी पहलुओं को लेकर यहाँ चित्र बने हैं। सुरापान आमोद–प्रमोद, रहन–सहन तथा श्रृंगार आदि विविध प्रकार के जीवन का चित्रण है।

भाव प्रदर्शन के लिए अजन्ता के चित्रकारों ने मुख नेत्र आदि के अतिरिक्त हस्तमुद्राओं द्वारा भाव–प्रदर्शन में विशेषता प्राप्त की है। हाथों की विभिन्न मुद्राँए विभिन्न अवसरों पर आशा–निराशा विनय सर्वनाश क्षमा सेवा त्याग तथा करूणा आदि के भाव प्रकट करती हैं।

सीमित रंगों में से विभिन्न प्रकार के रंगों का संयोजन कर रंगों की विविधता द्वारा चित्रों में त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न किया गया जो कि आश्यर्च का विषय है। जंगल में दृश्यों में वृक्ष, लता, पत्र, सरोवर जिस दक्षता से रंगों का प्रयोग किया गया उससे सुन्दर रंग योजना की सीमित रंगों की कल्पना ही नहीं की जा सकती। रंगों के आधार पर ही कम से कम 20 प्रकार की शैलियां अलग की जा सकती है।

अजन्ता के चित्रों में नारी को बहुत ऊँचा दर्जा दिया गया है। अधिकांशतया नारी को सौन्दर्य का प्रतीक माना जाता है। परन्तु अजन्ता के चित्रकारों ने नारी को कला की अधिष्ठात्री देवी के रूप में माना है। इन चित्रों में नारी भौतिक या शारीरिक आकर्षण का केन्द्र न होकर आध्यात्मिकता, वात्सल्य, करूणा, प्रेरणा एवं शक्ति की परिचारिका है। अधिकतर नारी अर्द्धनग्न रूप में चित्रित हुई है परन्तु उन कला के उपासकों ने उस रूप में भी शालीनता का जो दर्शन कराया है यह विश्व में अद्वितीय है।

यूनेस्को द्वारा 1983 से विश्व विरासत स्थल घोषित किये जाने के बाद अजंता की तस्वीरें और शिल्पकला बौद्ध धार्मिक कला के उत्कृष्ट नमूने माने गए हैं और इनका भारत में कला के विकास पर गहरा प्रभाव

है। रंगों का रचनात्मक उपयोग और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के उपयोग से इन गुफाओं के अंदर जो मानव और जंतु चित्रित किए गए हैं उन्हें कलात्मक रचनात्मकता का एक उच्च स्तर माना जा सकता है।

इस प्रकार अजन्ता की गुफाओ की चित्रकारी विश्वधरोहर के रूप मे संरक्षित है। देश की आजादी के पूर्व से और बाद में भारत सरकार के संरक्षण में निरन्तर इनकला मंदिरों का संरक्षण किया जा रहा है और सदेव इनके संरक्षण के प्रयास जारी रहेंगे।

वर्तमान में चित्रों और मूर्तियों के सामने लकड़ी की रेलिंग लगी हुई है ताकि चित्रों और मूर्तियों को कोई स्पर्श न कर सके। पर्यटक केमरे से फोटो खींच सकते हैं किन्तु फ्लेश चलाने की अनुमति नहीं है। गुफाओं के अंदर सीसी टीवी कैमरे लगे हुए हैं जिनसे निरन्तर निगरानी का कार्य होता रहता है। एक यूनिट का कार्य ही ह कि वह सतत् जागरूक रहकर वहाँ का निरीक्षण करती रहे। भूमि क्षरण न हो इसके भी उपाय निरन्तर किये जाते रहे हैं। समय के साथ छत आदि पर जो दरारें आदि आ जाती हैं उन्हें भरने का कार्य भी समय–समय पर होता रहता है। इन गुफाओं तक पहुँचाने के लिए महाराष्ट्र सरकार की विशेष बसों से ही जाना पड़ता है। अपने वाहनों द्वारा नहीं जाने दिया जाता। ताकि अधिक प्रदूषण न हो। गुफाओं में अन्दर जूते पहन कर नहीं जा सकते। इतने संरक्षण के बाद भी वहाँ की छत पर धूल की परत एवं कहीं–कहीं हल्के धब्बे जो नमी के कारण हो जाते हैं दिखाई पड़ते हैं। गुफाओं के आसपास हरसिंगार के वृक्षों का जंगल है उसे सुरक्षित रखना वातावरण एवं पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है तथा उस क्षेत्र के सौदर्य को बनाए रखने में भी सहायक ही नही विशिष्ट महत्व का है। हरसिंगार पूरी तरह भारतीय मूल का वृक्ष है। इसका पौराणिक इतिहास में आध्यात्मिक महत्व बताया गया है। कहा जाता है कि यह वृक्ष स्वर्ग में इन्द्र के उद्यान में लगा था। इसे भगवान कृष्ण धरती पर लेकर आए थे। यह वृक्ष औषधीय गुणों से युक्त है यह अनेकों बीमारियों को ठीक करता है। यह वर्षा ऋतु से शरद ऋतु के मध्य पुष्पित होता है। इन गुफाओं की चित्रकला एवं मूर्तिकला के आकर्षण के साथ–साथ इस हरसिंगार के जंगल का महत्व एवं आकर्षक भी पर्यटकों के लिये विशेष महत्व रखता है। इसकी देखभाल, इसकी वृद्धि संरक्षण का दायित्व सरकार के साथ वहाँ के स्थानीय लोगों का भी है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

पर्यटन की दृष्टि से अजन्ता की गुफाओं में निहित चित्रकला भारत में ही नहीं अपितु विश्व के मानचित्र पर अपना विशेष स्थान बनाए हुए है। यह कला के जगत में भारत की संस्कृति जीवन दर्शन का उत्कृष्ट स्वरूप है। पर्यटन के लिए यह स्थान विश्व आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ चित्रित चित्र एवं जातक कथाओं में भारत के जीवन का इतिहास प्रकट होता है इनमें भारतीय जीवन शैली संस्कृति और दर्शन का गहन चिन्तन समाहित है। अजन्ता की चित्रकला पर किसी ओर शैली एवं संस्कृति का प्रभाव नहीं है वह विशुद्ध रूप से भारतीय है। विश्व में अजन्ता की चित्रकला प्रथम कोटि की चित्रकला मानी गई है। यहाँ पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र यहाँ की चित्रकला के माध्यम से भारतीय जीवन मूल्यों को समझना भी रहा है।

यहाँ पूरे विश्व से प्रतिदिन पर्यटक आते है पर्यटकों को मुख्य द्वार पर निहित स्थान पर अपने वाहनों को खड़ा करने के निर्देश हैं। महाराष्ट्र की सरकारी बस ही पर्यटकों को अंदर ले जाती है। अजन्ता की गुफाओं तक पहुँचने का एवं वहाँ से लौटने का टिकट लगता है। यहाँ पर पत्थरों की मालाएँ, मूर्तियाँ, अजन्ता की मूर्तियों की अनुकृतियाँ, लकड़ी की मूर्तियों की बिक्री होती है। यहाँ किताबों की दुकानें कपड़े टोपी आदि की दुकाने भी हैं। उनकी बिक्री भी होती है। किन्तु इतनी कम दुकानों से या सीमित विकास से पर्यटन विभाग को अधिक आय नहीं हो सकती। यहाँ पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए स्थानीय कलाकारों द्वारा इस प्रकार की कलाओं का प्रदर्शन होना चाहिए जिससे विशेष रूप से विदेशी पर्यटक भारतीय जीवन की मूलधारा को समझें और उत्सव व स्थान विशेष का आनंद ले सकें। भारत में पहने जाने वाले पारंपरिक परिधानों तथा यहाँ की हस्तशिल्प से संबंधित वस्तुओं का प्रदर्शन एवं बिक्री भी होना चाहिए। कलाकारों द्वारा बुद्ध के दर्शन से संबंधित नृत्य नाटिकाएँ अथवा नाटकों का प्रदर्शन होना चाहिए तथा टिकट लगाकर धनोपार्जन करना चाहिए ताकि विदेशी मुद्रा भारत को प्राप्त हो और पर्यटन विभाग को अधिक आय हो। वहाँ हर सिंगार का जंगल है। इससे सिद्ध होता है कि हरसिंगार के वृक्षों के लिए यहाँ का वातावरण अनुकूल है। यहाँ और अधिक हरसिंगार के वृक्ष लगाने चाहिए और उनकी पत्तियों से औषधियाँ बनवाना चाहिए। वन विभाग के सहयोग से यह कार्य हो सकता है और वन विभाग को भी धन प्राप्त हो सकता है। हर सिंगार की पत्तियाँ मधुमेह, स्याटिका, वातरोग, त्वचा रोग, ज्वर कफ खांसी आदि से संबंधित रोगों के उपचार के काम में आती है। गुफाओं के पास जो दुकाने हैं वहाँ मूल्य–सूची लगवाकर निर्धारित मूल्यों की दरों पर ही सामान की बिक्री होना चाहिए। विदेशियों के समक्ष भारतीय व्यापारियों की सही छवि बनना चाहिए। उन्हें यह नहीं लगना चाहिए कि यह पर्यटन स्थल है अतः यहाँ मनमाने रूप से किसी भी वस्तु के कितने भी दाम लिए जा सकते हैं। भारतीय और विदेशियों के लिये एक ही कीमत मानक आधार पर तय होना चाहिए। इसके अलावा रहने के लिये पर्यटन विभाग की अच्छी होटल आवासीय सुविधाओं से युक्त स्थान, रेस्ट हाउस अधिक होने चाहिए ताकि विदेश से आने वाले पर्यटक अधिक समय तक उन स्थानों पर ठहर सकें। कुछ पर्यटक विशेष रूप से अध्ययन करने भी आते है अधिक दिनों तक पर्यटक तभी रह सकता है जब उसे खाने–पीने और रहने की सुविधाएँ अच्छी मिलती हैं स्वास्थ्य सेवाएँ भी अच्छी होना चाहिए। अच्छे चिकित्सकों की व्यवस्थाएँ होना चाहिए तभी हम पर्यटकों का विशेष ध्यान रख पायेंगे। पर्यटन विकास के लिये अजन्ता की गुफाओं का सरकारी विज्ञापन देना चाहिए। पर्यटकों को भी पर्यावरण का ध्यान रखते हुए वहाँ का वातावरण स्वच्छ रखना चाहिए। इस संबंध में जागरूकता बनाए रखने के लिये विशेष निर्देश लिखित रूप से जगह–जगह पोस्टर आदि के माध्यम से दिए जाएँ और स्थानीय लोगों, समाज सेवकों की भी सहायता से जन जागृति के प्रयास होना चाहिए ताकि इस धरोहर को सदियों पवित्र और सुरक्षित रखा जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Madangit Singh – Ajanta.
2. Dey Mukul Chandra – My Piligrimage to Ajanta and Bagh.
3. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला –डॉ. रीता प्रताप, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।
4. भारतीय चित्रकला का इतिहास – डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली (उ.प्र.)।
5. भारतीय चित्रकला रायकृष्णदास – कला प्रकाशन वाराणसी।

पादटिप्पणी

1. भारत की चित्रकला का इतिहास – लोकेश चन्द्र शर्मा पृष्ठ सं. 32–33।